

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Website: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 6, Issue 7, July 2017

### ‘प्रतिदान’ के द्रोणाचार्य

डॉ. सुमन ढाका

सह आचार्य-हिंदी, राजकीय कन्या महाविद्यालय, चौमू, जयपुर, राजस्थान, भारत  
सार

महाभारत के पात्रों और घटनाओं पर हिन्दी ही नहीं, अन्य भारतीय भाषाओं में भी महत्त्वपूर्ण उपन्यास लिखे गये हैं। इन सब के बीच रांगेय राघव का प्रस्तुत उपन्यास ‘प्रतिदान’ का विशेष महत्त्व है। ‘प्रतिदान’ के माध्यम से प्राचीन भारत के इतिहास तथा संस्कृति के विशेषज्ञ लेखक ने द्रोण की दरिद्रता से उसके वैभव की कथा कही है। द्रोण एक विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न ब्राह्मण था। लेकिन अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद जब उसने गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया, तो उसके पास साधनों का दारुण अभाव था। उस समय तक ब्राह्मण विद्वान क्षत्रिय राजाओं की सेवा स्वीकार कर सम्पन्न जीवन जीना शुरू कर चुके थे, पर द्रोण को यह स्वीकार्य नहीं था। ब्राह्मण सत्ता के साथ किसी प्रकार का समझौता करना उसे अपनी गरिमा के विरुद्ध लगता था। फलस्वरूप उसे निरन्तर अभाव और उपेक्षा का जीवन जीना पड़ा। जब उसका पुत्र अश्वत्थामा एक कटोरी दूध तक के लिए बिलखने लगा, तब द्रोण टूट गया। वह अपना गाँव छोड़ कर अपने सहपाठी राजा द्रुपद से सहायता माँगने के लिए पांचाल पहुँचा, तो द्रुपद ने भी उसका घोर अपमान किया। दरिद्रता और अपमान की पीड़ा ने द्रोण को कुरु वंश के राजकुमारों का शिक्षक बनने को बाध्य कर दिया। पांडव और कौरव उससे शस्त्र का ज्ञान प्राप्त करने लगे। इस बीच एकलव्य, कर्ण आदि के अनेक रोमांचकारी प्रसंग घटित होते हैं और अपने प्रिय शिष्य अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनाने के लिए द्रोण को अनेक छल करने पड़ते हैं। अन्त में, अर्जुन ही द्रुपद को रस्सियों से बाँध कर गुरु द्रोण के पैरों पर झुकवाता है और द्रोण की। प्रतिशोध भावना तृप्त होती है। रांगेय राघव का उद्देश्य सिर्फ कहानी कहना नहीं है। उन्होंने इसके माध्यम से महाभारत के प्रारम्भिक काल को, उसकी तमाम विविधता और जटिलता के साथ, प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। इस प्रक्रिया में उन्होंने। अनेक मिथक तोड़े हैं और अनेक भ्रमों का निवारण किया है। लेकिन ‘प्रतिदान’ अन्ततः एक उपन्यास ही है – लेखक के शब्दों में ‘महाभारतकालीन पौराणिक पृष्ठभूमि पर एक अर्वाचीन उपन्यास।

#### परिचय

#### द्रोणाचार्य का दुर्योधन को पुनः संधि के लिए समझाना

भीष्म बोले- जो गुरुजनों की सेवा के लिए उत्सुक, किसी के भी दोष न देखने वाले, ब्राह्मणभक्त और सत्यवादी है, उन्हीं युधिष्ठिर से हमें युद्ध करना पड़ेगा, इससे बढ़कर महान दुःख की बात और क्या होगी? द्रोणाचार्य ने कहा- राजन! मेरा अपने पुत्र अश्वत्थामा के प्रति जैसा आदर है, उससे भी अधिक अर्जुन के प्रति है। कपिध्वज अर्जुन में मेरे प्रति बहुत विनयभाव है। मेरे पुत्र से भी बढ़कर प्रियतम उन्हीं अर्जुन से मुझे क्षत्रिय धर्म का आश्रय लेकर युद्ध करना पड़ेगा। क्षात्रवृत्ति को धिक्कार है! मेरी ही कृपा से अर्जुन अन्य धनुर्धरों से श्रेष्ठ हो गए हैं। इस समय जगत में उनके समान दूसरा कोई धनुर्धर नहीं है। जैसे यज्ञ में आया हुआ मूर्ख ब्राह्मण प्रतिष्ठा नहीं पाता, उसी प्रकार जो मित्रद्रोही, दुर्भावनायुक्त, नास्तिक, कुटिल और शठ है, वह सत्पुरुषों में कभी सम्मान नहीं पाता है।[1] पापात्मा मनुष्य को पापों से रोका जाये तो भी वह पाप ही करना चाहता है और जिसका हृदय शुभ संकलों से युक्त है, वह पुण्यात्मा पुरुष किसी पापी के द्वारा पाप के लिए प्रेरित होने पर भी शुभ कर्म करने की ही इच्छा रखता है। भरतश्रेष्ठ! तुमने पांडवों के साथ सदा मिथ्या बर्ताव – छल कपट ही किया है तो भी ये सदा तुम्हारा प्रिय करने में ही लगे रहे हैं। अतः तुम्हारे ये ईर्ष्या-द्वेष आदि दोष तुम्हारा ही अहित करने वाले होंगे। कुरुकुल के वृद्ध पुरुष भीष्मजी ने, मैंने, विदुरजी ने तथा भगवान श्रीकृष्ण ने भी तुमसे तुम्हारे कल्याण की ही बात बताई है, तथापि तुम उसे मान नहीं रहे हो। जैसे कोई अविवेकी मनुष्य वर्षाकाल में बड़े हुए ग्राह और मकर आदि जल जन्तुओं से युक्त गंगाजी के वेग को दोनों बाहुओं से तैरना चाहता हो, उसी प्रकार तुम मेरे पास बल है, ऐसा समझकर पांडव-सेना को सहसा लांघ जाने की इच्छा रखते हो। जैसे कोई दूसरे का छोड़ा हुआ वस्त्र पहन ले और उसे अपना मानने लगे, उसी प्रकार तुम त्यागी हुई माला की भाँति युधिष्ठिर की राजलक्ष्मी को पाकर अब उसे लोभवश अपनी समझते हो।[2]

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Website: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 6, Issue 7, July 2017

अपने अस्त्र-शस्त्रधारी भाइयों से घिरे हुए द्रौपदी सहित पांडुनंदन युधिष्ठिर वन में रहे तो भी उन्हें राज्य सिंहासन पर बैठा हुआ कौन नरेश युद्ध में जीत सकेगा? समस्त राजा जिनकी आज्ञा में किंकर की भाँति खड़े रहते हैं, उन्हीं राजाराज कुबेर से मिलकर धर्मराज युधिष्ठिर उनके साथ विराजमान हुए थे। कुबेर के भवन में जाकर उनसे भाँति - भाँति के रत्न लेकर अब पांडव तुम्हारे समृद्धिशाली राष्ट्र पर आक्रमण करके अपना राज्य वापस लेना चाहते हैं। हम दोनों ने तो दान, यज्ञ और स्वाध्याय कर लिए। धन से ब्राह्मणों को तृप्त कर लिया। अब हमारी आयु समाप्त हो चुकी है, अतः हमें तो तुम कृतकृत्य ही समझो।[1]

परंतु तुम पांडवों से युद्ध ठानकर सुख, राज्य, मित्र और धन सब कुछ खोकर बड़े भारी संकट में पड़ जाओगे। तपस्या एवं घोर व्रत का पालन करने वाली सत्यवादिनी देवी द्रौपदी जिनकी विजय की कामना करती है, उन पांडुनंदन युधिष्ठिर को तुम कैसे जीत सकोगे? भगवान श्रीकृष्ण जिनके मंत्री और समस्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन जिनके भाई हैं, उन पांडुपुत्र युधिष्ठिर को तुम कैसे जीतोगे? धैर्यवान और जितेंद्रिय ब्राह्मण जिनके सहायक हैं, उन उग्र तपस्वी वीर पांडव को तुम कैसे जीत सकोगे? जिस समय अपने बहुत से सुहृद संकट के समुद्र में डूब रहे हों, उस समय कल्याण की इच्छा रखने वाले एक सुहृद का जो कर्तव्य है उस अवसर पर उसे जैसी बात कहनी चाहिए, वह यद्यपि पहले कही जा चुकी है, तथापि मैं उसे दुबारा कहूँगा। राजन! युद्ध में तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा। तुम कुरुकुल की वृद्धि के लिए उन वीर पांडवों के साथ संधि कर लो। पुत्रों, मंत्रियों तथा सेनाओं सहित यमलोक में जाने की तैयारी न करो।[2,3]

### विचार-विमर्श

#### द्रोणाचार्य और विराट के मध्य युद्ध

संजय कहते हैं- महाराज! जिस प्रकार अर्जुन और कृष्ण के भय से आपकी सेना में भगदड़ सी हो गयी, उसी प्रकार श्वेत घोड़े तथा श्वेत धनुष वाले शान्तनुनन्दन भीष्म को श्वेत ग्रह के समान उदित देख पाण्डव सैनिक उनसे आँख न मिला सके। महामना त्रिगर्तो ने अपने भाइयों, पुत्रों तथा अन्य महारथियों के साथ उपस्थित होकर भीष्म को सब ओर से घेर रखा था। दूसरी ओर द्रोणाचार्य ने मत्स्यराज विराट को युद्ध में एक बाण से बींध डाला तथा एक बाण से उनका ध्वज और एक से धनुष काट डाला। सेनापति विराट ने वह कटा हुआ धनुष फेंककर वेगपूर्वक दूसरे सुदृढ़ धनुष को हाथ में लिया, जो भार सहन करने में समर्थ था। उन्होंने उसके द्वारा प्रज्वलित सर्पों की भाँति विषैले नागों की सी आकृति वाले बाण छोड़कर तीन से द्रोणाचार्य को और चार बाणों से उनके घोड़ों को बींध डाला। फिर एक बाण से ध्वज को, पाँच बाणों से सारथि को और एक से धनुष को बींध डाला। इससे द्विजश्रेष्ठ द्रोणाचार्य को बड़ा क्रोध हुआ। भरतश्रेष्ठ! फिर द्रोण ने झुकी हुई गाँठ वाले आठ बाणों द्वारा विराट के घोड़ों को और एक बाण से सारथि को मार डाला। सारथि और घोड़ों के मारे जाने पर रथियों में श्रेष्ठ विराट अपने रथ से तुरंत कूद पड़े और पुत्र के रथ पर आरूढ़ हो गये।[3,4]

#### द्रोणाचार्य द्वारा विराटपुत्र शंख का वध

जनेश्वर! उन दोनों पिता-पुत्रों ने एक ही रथ पर बैठकर महान बाण वर्षा के द्वारा द्रोणाचार्य को बलपूर्वक आगे बढ़ने से रोक दिया। तब द्रोणाचार्य ने कुपित होकर युद्धभूमि में विषधर सर्प के समान एक भयंकर बाण शंख पर शीघ्रतापूर्वक चलाया। वह बाण शंख की छाती छेदकर रणभूमि में उसका रक्त पीकर धरती में समा गया। उसके श्रेष्ठ पंख लहू में भीगकर लाल हो रहे थे। द्रोणाचार्य के बाणों से घायल होकर शंख पिता के पास ही धनुष-बाण छोड़कर तुरंत ही रणभूमि में गिर पड़ा। अपने पुत्र को मारा गया देख मुँह बाये हुए काल के समान भयंकर द्रोणाचार्य को समरभूमि में छोड़कर विराट भय के मारे भाग गये। तब द्रोणाचार्य ने संग्रामभूमि में तुरंत ही पाण्डवों की विशाल वाहिनी को विदीर्ण करना आरम्भ किया। सैकड़ों हजारों योद्धा धराशायी हो गये।[4,5]

### परिणाम

द्रोणाचार्य ऋषि भारद्वाज तथा घृताची नामक अप्सरा के पुत्र तथा ध[1] कुरू प्रदेश में पांडु के पुत्रों तथा धृतराष्ट्र पुत्रों के वे गुरु थे। महाभारत युद्ध के समय वह कौरव पक्ष के सेनापति थे। गुरु द्रोणाचार्य के अन्य शिष्यों में एकलव्य का नाम उल्लेखनीय है। उसने द्रोणाचार्य द्वारा गुरु दक्षिणा माँगे जाने पर अपने दाएं हाथ का अंगूठा काट कर दे दिया। एकलव्य निषाद राज का पुत्र था और एक राजकुमार भी। कौरवों और पांडवों ने द्रोणाचार्य के आश्रम में ही अस्त्रों और शस्त्रों की शिक्षा पाई थी। अर्जुन द्रोणाचार्य के प्रिय शिष्य थे। वे अर्जुन को विश्व का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनाना चाहते थे।[2] महाभारत की कथा के अनुसार महर्षि भरद्वाज एक बार नदी में स्नान करने गए। स्नान के समाप्ति के बाद उन्होंने देखा की अप्सरा घृताची नग्न होकर स्नान कर रही है। यह देखकर वह कामातुर हो गए और उनके शिश्र से वीर्य टपक पड़ा। उन्हींने ये वीर्य एक द्रोण कलश में रखा, जिससे एक पुत्र जन्मा। दूसरे मत से कामातुर भरद्वाज ने घृताची से शारीरिक मिलन किया, जिनकी योनिमुख द्रोण कलश के मुख के समान थी। द्रोण (दोने) से उत्पन्न होने का कारण

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Website: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 6, Issue 7, July 2017

उनका नाम द्रोणाचार्य पड़ा। द्रोण अपने पिता के आश्रम में ही रहते हुये चारों वेदों तथा अस्त्र-शस्त्रों के ज्ञान में पारंगत हो गये। द्रोण के साथ प्रषत् नामक राजा के पुत्र द्रुपद भी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे तथा दोनों में प्रगाढ़ मैत्री हो गई। उन्हीं दिनों परशुराम अपनी समस्त सम्पत्ति को ब्राह्मणों में दान कर के महेन्द्राचल पर्वत पर तप कर रहे थे। एक बार द्रोण उनके पास पहुँचे और उनसे दान देने का अनुरोध किया। इस पर परशुराम बोले, "वत्स! तुम विलम्ब से आये हो, मैंने तो अपना सब कुछ पहले से ही ब्राह्मणों को दान में दे डाला है। अब मेरे पास केवल अस्त्र-शस्त्र ही शेष बचे हैं। तुम चाहो तो उन्हें दान में ले सकते हो।" द्रोण यही तो चाहते थे अतः उन्होंने कहा, "हे गुरुदेव! आपके अस्त्र-शस्त्र प्राप्त कर के मुझे अत्यधिक प्रसन्नता होगी, किन्तु आप को मुझे इन अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा-दीक्षा देनी होगी तथा विधि-विधान भी बताना होगा।" इस प्रकार परशुराम के शिष्य बन कर द्रोण अस्त्र-शस्त्रादि सहित समस्त विद्याओं के अभूतपूर्व ज्ञाता हो गये।[3] शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् द्रोण का विवाह कृपाचार्य की बहन कृपी के साथ हो गया। कृपी से उनका एक पुत्र हुआ। यह महाभारत का वह महत्वपूर्ण पात्र बना जिसका नाम अश्वत्थामा है। द्रोणाचार्य ब्रह्मास्त्र का प्रयोग जानते थे जिसके प्रयोग करने की विधि उन्होंने अपने पुत्र अश्वत्थामा को भी सिखाई थी। द्रोणाचार्य का प्रारंभिक जीवन गरीबी में कटा उन्होंने अपने सहपाठी द्रुपद से सहायता माँगी जो उन्हें नहीं मिल सकी। एक बार वन में भ्रमण करते हुए गेंद कुएँ में गिर गई। इसे देखकर द्रोणाचार्य ने अपने धनुर्विद्या की कुशलता से उसको बाहर निकाल लिया। इस अद्भुत प्रयोग के विषय में तथा द्रोण के समस्त विषयों में प्रकाण्ड पण्डित होने के विषय में ज्ञात होने पर भीष्म पितामह ने उन्हें राजकुमारों के उच्च शिक्षा के नियुक्त कर राजाश्रय में ले लिया और वे द्रोणाचार्य के नाम से विख्यात हुये।[4,6]

### निष्कर्ष

जब महाभारत का युद्ध तय हुआ तो द्रोण ने अपने पुत्र अश्वत्थामा समेत कौरव सेना का साथ दिया। युद्ध की शुरुआत में वे एक मुख्य भूमिका में थे। युद्ध के ग्यारहवें दिन के बाद भीष्म पितामह को अर्जुन के बाणों की शारश्या पर लटने के बाद दुर्योधन ने कर्ण के कहने पर द्रोण को कौरव सेना का प्रधान सेनापति चुना। सेनापति बनते ही दुर्योधन और शकुनि द्रोण से कहते हैं कि युधिष्ठिर को बंदी बना लेंगे तो युद्ध समाप्त हो जाएगा। दुर्योधन की योजना को अर्जुन पूर्ण नहीं होने देता है। कर्ण भी पांडव सेना का भारी संहार करता है। दूसरे ही दिन युधिष्ठिर को बंदी बनाने के लिए शकुनि और दुर्योधन अर्जुन को युधिष्ठिर से बहुत दूर भेजने में समर्थ हो जाते हैं, लेकिन अर्जुन समय पर पहुँचकर युधिष्ठिर को बंदी बनने से बचा लेते हैं। दुर्योधन राजा भगदत्त को अर्जुन से युद्ध करने के लिए भेजता है। भगदत्त भीम को हराके अर्जुन के साथ युद्ध करते हैं। श्रीकृष्ण भगदत्त के वैष्णवास्त्र को अपने ऊपर लेकर अर्जुन की रक्षा करते हैं। अर्जुन भगदत्त की आँखों की पट्टी तोड़ देता है, जिससे उसे दिखना बंद हो जाता है। अर्जुन इस अवस्था में ही उनका वध कर देता है। इसी दिन द्रोण युधिष्ठिर के लिए चक्रव्यूह रचते हैं जिसे केवल अर्जुन, श्रीकृष्ण एवं अभिमन्यु तोड़ना जानता थे। परंतु अभिमन्यु चक्रव्यूह से निकलना नहीं जानता था। युधिष्ठिर भीम आदि को अभिमन्यु के साथ भेजता है, लेकिन चक्रव्यूह के द्वार पर जयद्रथ सभी को रोक देता है। केवल अभिमन्यु ही प्रवेश कर पाता है। वह अकेला ही सभी कौरवों से युद्ध करता है और मारा जाता है। पुत्र अभिमन्यु का अन्याय पूर्ण तरीके से वध हुआ देखकर अर्जुन अगले दिन जयद्रथ वध करने की प्रतिज्ञा ले लेता है और ऐसा न कर पाने पर अग्नि समाधि लेने को कह देता है। युद्ध के चौदहवें दिन अर्जुन की अग्नि समाधि की बात सुनकर द्रोण कौरव के साथ मिलकर जयद्रथ को बचाने योजना बनाते हैं। द्रोण जयद्रथ को बचाने के लिए उसे सेना के पिछले भाग में छिपा देते हैं, लेकिन श्रीकृष्ण द्वारा किए गए सूर्यास्त के कारण जयद्रथ बाहर आ जाता है और अर्जुन और वध कर देता है। इसी दिन द्रोण द्रुपद और विराट को मार देते हैं।[7]

युद्ध के पंद्रहवें दिन द्रोण द्वारा युद्ध में हो रही पांडव सेना की हानि को देख श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर को द्रोण को हराने के लिए भेद का सहारा लेने को कहा और युद्ध में ये बात फैलाने के लिए कहा की अश्वत्थामा युद्ध में मारा गया। तब इसको अपने धर्म के विरुद्ध देख कर युधिष्ठिर इस कपट को नकारने की कोशिश करने लगे तभी एक योजना के तहत भीम ने अर्वातिराज के एक अश्वत्थामा नामक हाथी का वध किया और युधक्षेत्र में ये बात फैलाने लगा कि अश्वत्थामा मारा गया। जब इस बात का द्रोण को इसका पता चला तो वो युधिष्ठिर के पास गए और पूछा कि सच में अश्वत्थामा की मृत्यु हो गई है तब युधिष्ठिर ने अश्वत्थामा नामक मरे हुए हाथी को ध्यान में रख कर हाँ कह दिया। इसको सुन कर द्रोण को सदमा लगा और वो अपने अस्त्र शस्त्र त्याग कर अपने इकलौते पुत्र की मौत का शोक बनाने हेतु धरती पर बैठ गए। तभी पांडव सेना के सेनापति और द्रोपदी के भाई धृष्टद्युम्न ने तलवार से द्रोण का वध कर दिया।[8]

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Website: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 6, Issue 7, July 2017

### संदर्भ

1. Mittal, J. P. (2006). History Of Ancient India (a New Version) From 4250 Bb To 637 Ad (अंग्रेज़ी में). Atlantic Publishers & Dist. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 9788126906161. मूल से 28 जुलाई 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 जुलाई 2016.
2. ↑ Doyle, Christopher C. (2013). The Mahabharata Secret (अंग्रेज़ी में). Om Books International. मूल से 28 जुलाई 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 जुलाई 2016.
3. ↑ Tharoor, Shashi (1993). The Great Indian Novel (अंग्रेज़ी में). Arcade Publishing. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 9781559701945. मूल से 28 जुलाई 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 जुलाई 2016.
4. ↑ "द्रोणाचार्य". ब्रज डिस्कवरी. मूल से 16 जुलाई 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि ३० दिसंबर २००९. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
5. महाभारत उद्योग पर्व अध्याय 139 श्लोक 1-16
6. महाभारत उद्योग पर्व अध्याय 139 श्लोक 17-22
7. महाभारत भीष्म पर्व अध्याय 82 श्लोक 1-20
8. महाभारत भीष्म पर्व अध्याय 82 श्लोक 21-42